

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की सोच शैली के संबंध में शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन

Sandhya Dubey^{1*}, Dr. Dileep Kumar Shukla²

¹ Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

² Professor, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

सार- समाज की सतत मांगों को पूरा करने के लिए शिक्षा प्रणाली को भी उसी गति से गति देनी चाहिए। राष्ट्र के निर्माण और ज्ञानवर्धन का कार्य केवल उसके बच्चों के कंधों पर निर्भर करता है और शिक्षा हमेशा विकास के चरणों में उनके व्यवहार को आकार देने में मदद करती है। माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की सोच शैली और जनसांख्यिकीय चर के संबंध में शिक्षक प्रभावशीलता की जांच करने के लिए वर्तमान अध्ययन किया गया था। परिणामों से पता चला कि पुरुष और महिला शिक्षकों की विधायी, कार्यकारी, पदानुक्रमित और आंतरिक सोच शैली के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर पाया गया जबकि पुरुष की न्यायिक, राजशाही, अराजक, कुलीनतंत्र, वैश्विक, बाहरी, स्थानीय, उदारवादी, रूढ़िवादी सोच शैली में नगण्य अंतर पाया गया। शिक्षक प्रभावशीलता और शिक्षण अनुभव और स्थान के बीच सकारात्मक सहसंबंध पाया गया और शिक्षक प्रभावशीलता और लिंग के बीच नकारात्मक सहसंबंध पाया गया।

कीवर्ड- प्रभावशीलता, माध्यमिक विद्यालय, शिक्षकों, सोच शैली, संबंध, शिक्षक

-----X-----

परिचय

व्यक्तिगत से लेकर सामाजिक विकास तक सभी क्षेत्रों में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। समाज का हर पहलू दिन-प्रतिदिन बदल रहा है इसलिए बदलते समाज के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए शिक्षा ही एकमात्र उपयुक्त उपकरण है। शिक्षा एक महत्वपूर्ण मानवीय गतिविधि है क्योंकि शिक्षा को एक जादुई सूत्र के रूप में नहीं माना जा सकता है और यह अंत नहीं है बल्कि इसे समाज की बुराइयों को दूर करने का एक साधन माना जाता है (रानी सरला और देवी पूर्णिमा, 2015)। यह तकनीकी और वैज्ञानिक क्षेत्र को बदलकर मानव के सामंजस्यपूर्ण विकास को बढ़ावा देता है। समाज की सतत मांगों को पूरा करने के लिए शिक्षा प्रणाली को भी उसी गति से गति देनी चाहिए। राष्ट्र के निर्माण और ज्ञानवर्धन का कार्य केवल उसके बच्चों के कंधों पर निर्भर करता है और शिक्षा हमेशा विकास के चरणों में उनके व्यवहार को आकार देने में मदद करती है। सामाजिक, आर्थिक, राष्ट्रीय, आध्यात्मिक, व्यावसायिक विकास और विकास में शिक्षा की मौलिक

भूमिका को व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है (अनुराधा विजया, 2014)।

शिक्षा विकास की कुंजी है और शांतिपूर्ण सामाजिक वातावरण बनाने का प्रयास करती है। "शिक्षा एक अधिकार है जो उचित और समर्थित मूल साझा मूल्यों द्वारा जीवन को बेहतर बनाता है। क्योंकि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा गरीबी को कम करने, स्वास्थ्य और आजीविका में सुधार, लाभप्रदता बढ़ाने और अधिक समावेशी, स्थिर और शांतिपूर्ण समाज बनाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण शक्ति है। जीवन बदलने में शिक्षक की सकारात्मक भूमिका, और लड़कियों और महिलाओं को शिक्षित करने की बेजोड़ परिवर्तनकारी ऊर्जा। शिक्षक छात्रों को अच्छे काम के माध्यम से जीवन की गुणवत्ता की ओर बढ़ने में मदद करता है और उत्पादकता बढ़ाने के लिए उनकी कमाई बढ़ाता है जिसके परिणामस्वरूप आर्थिक विकास होता है (सैदेह मसाफ़ी, 2014)।

प्रारम्भ से ही शिक्षक की भूमिका न केवल व्यवहार को ढालने में बल्कि समाज के आधारभूत विकास में भी

मानी जाती है। शिक्षकों की गुणवत्ता के महत्व को डॉ. ए. भारत के पूर्व राष्ट्रपति पी जे अब्दुल कलाम के अनुसार, "किसी देश में शिक्षा का पूरा उद्देश्य मानव संसाधन की क्षमता को सहजता से बनाना और बढ़ाना है और शिक्षा के इस उद्देश्य की व्याख्या करने के लिए इसे धीरे-धीरे एक ज्ञान समाज में बदलना है, शिक्षक के पास बहुत है महत्वपूर्ण और गैर-बदली जा सकने वाली भूमिका।" शिक्षा जीवन और व्यवहार के प्रदर्शन की संरचना होनी चाहिए। इसमें राष्ट्रवाद और अंतरराष्ट्रीय समझ की भावना शामिल होनी चाहिए। और इस प्रकार यह चरित्र के विकास और व्यक्तियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए नेतृत्व करना चाहिए। आज सांस्कृतिक नैतिकता, मूल्यों और मानकों का क्षय हो रहा है।

शिक्षक प्रभावशीलता

बुद्ध कहते हैं कि दीपक हमेशा अद्वितीय गुण रखता है। एक दीपक अपनी चमक खोए बिना दूसरे दीपक को जलाने में सक्षम होता है और हमेशा चमकता रहता है। इस दीपक की तुलना शिक्षक से की जा सकती है। यदि कोई शिक्षक द्वारा निभाई गई निस्वार्थ भूमिका को देखता है, तो निश्चित रूप से उपरोक्त सत्य की सराहना की जा सकती है। 'टीच' शब्द एंग्लो सैक्सन शब्द 'टीकॉन' से लिया गया है जिसका अर्थ है "प्रदान करना", "निर्देश देना", "जागरूक करना" और "प्रशिक्षित करना"। एक शिक्षक को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसके पास किसी विशेष क्षेत्र में प्रचुर ज्ञान है और इस ज्ञान को जरूरतमंद तक पहुंचाते हैं। "शिक्षक प्रभावशीलता" शब्द का प्रयोग शिक्षक के परिणामों या शिक्षा के कुछ निर्दिष्ट लक्ष्यों की दिशा में विद्यार्थियों द्वारा की गई प्रगति की मात्रा को संदर्भित करने के लिए किया था। शिक्षक की समाज में एक अनूठी और कीमती स्थिति होती है क्योंकि वे मानव बुद्धि की जन्मजात क्षमताओं को बाहर निकालने के लिए ज्ञान के ट्रांसफार्मर के रूप में कार्य करते हैं (वांग यिंग, 2013)।

शिक्षक प्रभावशीलता को छात्रों की शारीरिक, शैक्षणिक और मनोवैज्ञानिक चिंताओं, सामग्री या सामग्री, शिक्षकों की क्षमता और मूल्यांकन प्रक्रियाओं के साथ बातचीत करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया गया है। शिक्षक की प्रभावशीलता छात्र के शैक्षणिक विकास को बहुत प्रभावित करती है और इस प्रकार सीखने में बेहतर रुचि पैदा करती है। जब शिक्षक व्यवस्थित शिक्षण प्रक्रियाओं में शामिल होते हैं तो छात्र अधिक समझ पाते हैं। यह अच्छा है जब

शिक्षक विद्यार्थियों के छोटे समूहों पर अधिक समय व्यतीत करते हैं, और उनके प्रदर्शन पर छात्रों के साथ प्रतिक्रिया साझा करने के लिए व्यवस्थित दृष्टिकोण का उपयोग करते हैं। शिक्षक की प्रभावशीलता को जिम्मेदारी के कार्य के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। शिक्षण कौशल को मापने के लिए सबसे अधिक प्रचलित प्रक्रिया छात्रों के सीखने के परिणाम हैं, और उनकी शैक्षणिक उपलब्धियां उनके प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित करने और पुनः कल्पना करने के प्रमुख क्षेत्र रहे हैं (कौट्स अमित, 2014)।

आजकल के शिक्षकों को समाज की चुनौतियों का सामना करने के लिए तरह-तरह के काम करने पड़ते हैं:-

- पाठ्यचर्या सामग्री और शिक्षण के लिए रणनीतियों और शिक्षण की शैलियों के बारे में जानकारी।
- अपने छात्रों से मौजूदा समस्याओं का पता लगाने के लिए संवाद करें जैसे कि उनसे क्या अपेक्षित है, और क्यों और उनके शिक्षण में सुधार करने का प्रयास करें।
- इंटरैक्टिव कक्षा शिक्षण सीखने की प्रक्रिया का संचालन करना और विकलांग बच्चों की विशेष जरूरतों को पूरा करने के लिए अनुकूल कक्षा वातावरण बनाना
- विभिन्न प्रकार की सह-पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों और थीम आधारित असेंबली का आयोजन और मार्गदर्शन करें
- छात्रों में समस्या-समाधान की मनोवृत्ति विकसित करता है और उनके लोकतांत्रिक नागरिकता के गुणों को बढ़ाता है और इस प्रकार पर्यावरण चेतना को बढ़ावा देता है।
- समुदाय आधारित सेवा और विकास कार्यक्रमों का आयोजन और सक्रिय रूप से भाग लेना।
- छात्र परिणामों और उनकी सफलता के लिए जिम्मेदारी स्वीकार करें।

21वीं सदी तीव्र आधुनिकीकरण का युग होगी और शिक्षक और छात्र दोनों को परिवर्तनों और चुनौतियों का सामना करना होगा। सूचना समाज को कारखाने के उत्पादन के लिए तैयार औद्योगिक अर्थव्यवस्था की तुलना में सभी व्यक्तियों के उच्च स्तर के कौशल और ज्ञान की आवश्यकता होती है। पर्यावरणीय परिवर्तन

अपरिहार्य हैं और इसलिए एक शिक्षक प्रभावी होता है यदि वह अपने पर्यावरण के अनुकूल और सुधार कर सकता है। शिक्षक को विविध माध्यमों के उपयोग के माध्यम से छात्रों के बीच वैचारिक समझ और विश्लेषणात्मक क्षमता को बढ़ाने में सक्षम होना चाहिए। शिक्षक की प्रभावशीलता को कई कारकों के माध्यम से उनकी योग्यता और कक्षा में उनके प्रदर्शन के माध्यम से आंका जा सकता है (पचैयप्पन, 2014)। उनकी योग्यता और प्रदर्शन के साथ शिक्षण का कार्य कक्षा में प्रभावशीलता का परिणाम है। इसके अलावा, आधुनिक तकनीक की उपलब्धता, उन्नत मीडिया को शिक्षण सीखने की प्रक्रिया में शामिल करना होगा।

सोच शैली

यह युग तीव्र आधुनिकीकरण का है और इस प्रकार वैज्ञानिक आविष्कारों और तकनीकी उन्नति जैसे हर क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन हुआ है। इन प्रगति का सामना करने के लिए और इस तेजी से बदलते और विकासशील समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, लोगों को तर्कसंगत, रचनात्मक रूप से सोचने और इस प्रकार अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने की क्षमता में बढ़ने की आवश्यकता है। स्वतंत्र और सकारात्मक विचार, सावधानीपूर्वक और गहन अवलोकन सफलता के योगदान कारक हैं। सोच संज्ञानात्मक व्यवहार के प्रमुख पहलुओं में से एक है। सोच उस व्यक्ति को आधार प्रदान करती है जिस पर व्यवहार के संज्ञानात्मक, भावात्मक और रचनात्मक डोमेन निर्भर करते हैं जो टिप्पणी को उचित रूप से सही ठहराते हैं जैसे- "कार्य करने से पहले सोचें"। सोच का एक निश्चित उद्देश्य और अंत होता है। यह हमेशा किसी न किसी कठिनाई से शुरू होता है और इसके समाधान में समाप्त होता है। समस्या के समाधान में समस्या की खोज, वस्तुओं, गतिविधियों और अनुभवों का मानसिक हेरफेर शामिल है। सोचने की शैली बुद्धि की तरह नहीं है; बुद्धि व्यक्तिगत क्षमताओं, क्षमता और कार्य को करने की क्षमताओं को संदर्भित करती है, हालांकि, सोच शैली व्यक्तिगत प्राथमिकताओं को संदर्भित करती है (जानी भारती, 2017)। शैली न तो अनुभूति है, न व्यक्तित्व है बल्कि उनका संयोजन है। सोचने की शैली वह तरीका है जिससे कोई व्यक्ति जानकारी की कल्पना करना पसंद करता है। यह सीखने की प्रक्रिया के दौरान और बाद में सूचना या कार्य के बारे में सोचने के लिए व्यक्ति की प्राथमिकता को भी संदर्भित करता है।

सोच शैलियों के आयाम:

- कार्य
- प्रपत्र
- स्तर
- दायरा
- झुकाव

साहित्य की समीक्षा

जानी भारती (2017) ने कालाहांडी के प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों के तनाव का अध्ययन किया। माइकल जे. फिमियन द्वारा विकसित टीचर्स स्ट्रेस स्केल की तुलना में कालाहांडी के प्राथमिक विद्यालय के 100 शिक्षकों का एक प्रतिनिधि नमूना यादृच्छिक रूप से चुना गया था। डेटा संग्रह के लिए प्रशासित किया गया था। निष्कर्षों से पता चला कि निजी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक सरकारी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की तुलना में अधिक तनाव में हैं।

कटिगरी अलीपुर शिवा एट अल (2017) ने हाई स्कूल के छात्रों की चिंता और सोच और सीखने की शैलियों की भूमिका का परीक्षण किया। नमूने में क्लस्टर नमूना पद्धति द्वारा अरक सिटी के 400 (200 पुरुष और 200 महिला) छात्र शामिल थे। डेटा को कोल्बे लर्निंग स्टाइल इन्वेंट्री (1991) और स्टर्नबर्ग वैगनर थिंकिंग स्टाइल इन्वेंट्री (1992) के माध्यम से एकत्र किया गया था। डेटा का विश्लेषण पियर्सन सहसंबंध गुणांक और एनोवा द्वारा किया गया था। परिणामों से पता चला कि कार्यकारी और न्यायिक सोच शैली के बीच महत्वपूर्ण संबंध पाया गया। और छात्र परीक्षण चिंता के साथ कानूनी सोच शैली का महत्वपूर्ण संबंध मौजूद है।

सान्याल एन. एट अल (2016) ने शिक्षकों के बीच व्यक्तिगत प्रभावशीलता, संगठनात्मक संस्कृति और काम से संबंधित तनाव के बीच संबंधों की जांच की। उद्देश्यपूर्ण नमूना तकनीक के माध्यम से सीबीएसई, आईएससी स्कूलों और स्नातक, स्नातकोत्तर कॉलेजों से 320 शिक्षकों का चयन किया गया था। और परिणामों से पता चला कि व्यक्तिगत प्रभावशीलता और संगठनात्मक संस्कृति के बीच सकारात्मक संबंध पाया गया लेकिन प्रभावशीलता और तनाव के बीच नकारात्मक संबंध।

गुप्ता नीता और श्रीवास्तव नेहर्शी (2016) ने माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता और नौकरी से संतुष्टि के संबंध में शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन किया। माध्यमिक विद्यालय के 200 शिक्षकों का प्रतिनिधि नमूना तिहाड़ 30प्र0 से एकत्र किया गया। कुमार और मुथा (1999) द्वारा विकसित शिक्षक प्रभावशीलता पैमाने का उपयोग करके डेटा एकत्र किया गया था, हाइड एट अल (2001) द्वारा विकसित भावनात्मक बुद्धिमत्ता पैमाने का उपयोग करके भावनात्मक बुद्धिमत्ता को मापा गया था और नौकरी की संतुष्टि को नौकरी से संतुष्टि पैमाने (कुमार और मुथा, 2007) का उपयोग करके मापा गया था।) तत्पश्चात आँकड़ों के विश्लेषण के लिए टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया। परिणामों से पता चला कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता और नौकरी की संतुष्टि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है।

तूर कौर (2016) ने माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता, सामान्य बुद्धि और रचनात्मकता का अध्ययन किया। नमूने में पंजाब के 850 माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक शामिल हैं। विश्लेषण से पता चला कि पुरुष और महिला माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया, जबकि सरकारी स्कूलों के मामले में पुरुष और महिला दोनों शिक्षक प्रभावी हैं। इसके अलावा पुरुष और महिला शिक्षकों की बुद्धि के बीच महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। सरकारी और निजी दोनों स्कूलों के मामले में महिला शिक्षकों को पुरुष समकक्षों की तुलना में अधिक बुद्धिमान पाया गया। माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच सामान्य बुद्धि और रचनात्मकता के साथ सभी शिक्षक प्रभावशीलता सकारात्मक और महत्वपूर्ण रूप से संबंधित है।

शेकेम्बी एफ. एट अल (2015) ने कोसोवो के 799 शिक्षकों पर शिक्षकों के तनाव की जांच की। एनोवा और सहसंबंध का उपयोग सांख्यिकीय तकनीक के रूप में किया गया था। परिणामों से पता चला कि 33.2% शिक्षकों ने उच्च स्तर के तनाव की सूचना दी। कार्यस्थल से संबंधित तनाव ज्यादातर शारीरिक कार्य और अनुशासनहीन छात्रों से प्रभावित होता है।

अनुसंधान क्रियाविधि

अनुसंधान रचना अनुसंधान कार्य का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

अनुसंधान गतिविधि को सुचारु रूप से और सफलतापूर्वक करने के लिए उचित योजना बनाना एक पूर्वापेक्षा शर्त है। किसी भी शोध में, शैक्षिक और सामाजिक समस्याओं का समाधान तभी किया जा सकता है, जब उसकी वैज्ञानिक और योजनाबद्ध तरीके से जाँच की जाए। एक गतिविधि की योजना और प्रक्रिया स्पष्ट रूप से अध्ययन को पूरा करने के लिए आवश्यक साधनों और तरीकों के बारे में एक तस्वीर का वर्णन करती है। इसमें आवश्यक डेटा के प्रकार, डेटा के स्रोत, डेटा एकत्र करने वाले उपकरण और डेटा के विश्लेषण के लिए उपयोग की जाने वाली सांख्यिकीय तकनीकों का विवरण शामिल है।

अध्ययन की विधि

अध्ययन की विधि मुख्य रूप से शोध समस्या और किसी विशेष घटना के प्रति व्यवस्थित दृष्टिकोण पर निर्भर करती है। चूंकि वर्तमान शोध का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की सोच शैली, व्यावसायिक तनाव और जनसांख्यिकीय चर के संबंध में शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन करना है, इस उद्देश्य के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया था। वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को शैक्षिक शोध के लिए सर्वोत्तम विधियों में से एक माना था, क्योंकि यह शोध कार्य की वर्तमान स्थिति का वर्णन करती है।

अध्ययन के चर

वर्तमान शोध में अध्ययन के चरों को स्वतंत्र चर और आश्रित चर में वर्गीकृत किया था।

स्वतंत्र चर: वर्तमान अध्ययन में विचार शैली, व्यावसायिक तनाव और जनसांख्यिकीय चर को स्वतंत्र चर के रूप में लिया था क्योंकि उनका प्रभाव अध्ययन के अन्य चरों पर देखा था।

आश्रित चर: वर्तमान अध्ययन में शिक्षक प्रभावशीलता को एक आश्रित चर के रूप में लिया था क्योंकि यह अन्य चर पर निर्भर करता है।

नमूने का आकार

जबलपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सभी शिक्षकों को अध्ययन की जनसंख्या के रूप में माना था। प्रस्तुत अध्ययन में यादृच्छिक प्रतिचयन

पद्धति का प्रयोग किया था। सैंपल का चयन जबलपुर जिले से किया था। जबलपुर क्षेत्र से 800 माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का एक प्रतिनिधि नमूना यादृच्छिक रूप से चुना था। शोध के दौरान माध्यमिक विद्यालय के 800 शिक्षकों में से शोधकर्ता को केवल 600 शिक्षकों से प्रतिक्रिया मिली। प्रत्येक जिले से शहरी और ग्रामीण स्कूलों का यादृच्छिक रूप से चयन किया था और इसलिए 600 माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का चयन किया था।

विद्यालयों का चयन- जबलपुर से माध्यमिक विद्यालय के 600 शिक्षकों का चयन किया था। विद्यालयों का चयन सरल यादृच्छिक पद्धति से किया जायेगा।

उपकरण का चयन और विकास- उपयुक्त उपकरण का चयन अनुसंधान का प्रतीक है। डेटा एकत्र करने के उद्देश्य से विभिन्न उद्देश्यों के लिए विभिन्न प्रकार की जानकारी एकत्र करने के लिए विभिन्न उपकरणों का उपयोग किया जाता है। प्रस्तुत शोध का मुख्य जोर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन करना होगा। चूंकि शिक्षक की प्रभावशीलता छात्र की सफलता के लिए बहुत महत्वपूर्ण पहलू है, इसलिए इस शोधकर्ता ने सोच शैली और व्यावसायिक तनाव के संबंध में शिक्षकों की प्रभावशीलता का न्याय करने के लिए उपकरणों का उपयोग किया। अतः शोध कार्य के मापदण्डों को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया है।

तालिका 1: अध्ययन के उपकरण

क्रमांक	चर	उपकरण
1.	सोच शैली	थिंकिंग स्टाइल स्केल (TSS)
2.	शिक्षक प्रभावशीलता	शिक्षकों के लिए शिक्षक प्रभावशीलता पैमाना (TES) शिक्षक प्रभावशीलता स्केल छात्रों की रेटिंग
3.	व्यावसायिक तनाव	शिक्षक व्यावसायिक तनाव पैमाना (टीओएस)

डेटा संग्रह की प्रक्रिया

शोधार्थी डेटा संग्रहण के लिए जबलपुर क्षेत्र का भ्रमण करेगा तथा विभिन्न उपकरणों के संचालन हेतु अनुसंधानकर्ता ने माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं प्रधानाध्यापकों से सम्पर्क कर शोध का उद्देश्य एवं महत्व समझाया। परिचय के बाद, शोधकर्ता ने शोध के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों / प्रमुखों के साथ तालमेल स्थापित किया। अंत में, सभी प्रश्नावली शिक्षकों को वितरित की जाएंगी और उनसे वापसी की तारीख तय करने के लिए कहा था, जिस पर शिक्षक और शोधकर्ता दोनों सहमत होंगे। दूसरे चरण में, अन्वेषक ने उसी तारीख को फिर से स्कूलों का दौरा किया, जो पहले बैठक में तय की जाएगी कि वे उपकरण वापस ले लें।

सांख्यिकीय तकनीक

डेटा को संसाधित करने के लिए सांख्यिकीय तकनीकों को नियोजित किया था। अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण किया था। यह एकत्रित डेटा की प्रासंगिकता सुनिश्चित करता है और इसलिए निष्कर्षों के आधार पर सामान्यीकरण किया जा सकता है। डेटा के प्रसंस्करण में डेटा का संपादन, कोडिंग, वर्गीकरण और डेटा का सारणीकरण शामिल है। एसपीएसएस सॉफ्टवेयर का उपयोग करके डेटा का विश्लेषण किया था। वर्णनात्मक सांख्यिकी में - माध्य, मानक विचलन और रेखांकन का उपयोग किया था और अनुमानात्मक आँकड़ों में t-परीक्षण और सहसंबंध का उपयोग किया था।

वर्णनात्मक सांख्यिकी- वर्णनात्मक आँकड़े सारांश आँकड़े देते हैं जो मुख्य रूप से मात्रात्मक रूप से जानकारी का वर्णन और सारांशित करते हैं।

- अर्थ
- मानक विचलन
- डेटा का ग्राफिकल प्रतिनिधित्व

अनुमानात्मक आँकड़े- यह परिणामों के बारे में निष्कर्ष निकालने में मदद करता है। दो समूहों की तुलना को समझाने के लिए टी परीक्षण का उपयोग किया था और दो चर के बीच संबंध को बिंदु द्विभाजित सहसंबंध द्वारा मापा था।

परिणाम विश्लेषण

शोधकर्ता उपरोक्त जानकारी को ध्यान में रखते हुए एकत्रित आंकड़ों के आधार पर परिणामों के विश्लेषण और व्याख्या का वर्णन करता है। हाल के दिनों में, सोच शैली और शिक्षक प्रभावशीलता के विभिन्न आयामों को समझने के कई प्रयास हुए हैं। इस विषय ने शैक्षिक प्रशासकों और शैक्षिक मनोवैज्ञानिकों के बीच काफी रुचि पैदा की है जिन्होंने शिक्षक प्रभावशीलता और सोच शैली की घटना को अपने परिप्रेक्ष्य में समझाने की कोशिश की है।

तालिका 1: माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता को प्रदर्शित

शिक्षक प्रभावशीलता	प्रतिशत %
प्रभावी शिक्षक	26.5%
मध्यम प्रभावी शिक्षक	44%
अप्रभावी	29.5%

तालिका 1 प्रतिशत में शिक्षक प्रभावशीलता का वर्गीकरण दर्शाती है। शिक्षक प्रभावशीलता की गणना शिक्षक और छात्र के अंकों के औसत अंकों को लेकर की गई थी। अतः उपरोक्त तालिका से यह निष्कर्ष निकलता है कि 26.5 प्रतिशत शिक्षक प्रभावी शिक्षकों की श्रेणी में आते हैं, 44 प्रतिशत शिक्षक मध्यम प्रभावी शिक्षकों की श्रेणी में आते हैं जबकि 29.5 प्रतिशत शिक्षक प्रभावी शिक्षकों की श्रेणी में आते हैं। तो यह दर्शाता है कि केवल 26.5% माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक प्रभावी थे।

तालिका 2: माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की पसंदीदा सोच शैली को प्रदर्शित करती है

सोच शैलियाँ	पूरा नमूना (एन = 800)
विधायी शैली	78 %
कार्यकारी शैली	80 %
न्यायिक शैली	79 %
पदानुक्रमित शैली	80 %
राजशाही शैली	79.26 %
ओलिगार्सिक शैली	75.15 %
अराजक शैली	75.04 %
वैश्विक शैली	74 %
स्थानीय शैली	79.4 %
आंतरिक शैली	76.91 %
बाहरी शैली	76 %
उदार शैली	79.96 %
रुढ़िवादी शैली	81 %

तालिका 2 से पता चलता है कि सबसे पसंदीदा सोच शैली रुढ़िवादी शैली थी। माध्यमिक विद्यालय के 81% शिक्षक रुढ़िवादी शैली पसंद करते हैं, जबकि माध्यमिक विद्यालय के 80% शिक्षक कार्यकारी, पदानुक्रमित और उदार शैली का पालन करते हैं। विधायी, न्यायिक, राजशाही, स्थानीय शैली और आंतरिक शैलियों के मामले में क्रमशः 77.44%, 78.9%, 79.26, 78.1% और 77.1% को माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों द्वारा पसंद किया गया था।

तालिका 3: पुरुष और महिला द्वितीय विद्यालय के शिक्षकों के बीच पसंदीदा सोच शैलियों का प्रतिशत प्रदर्शित करती है

सोच शैलियाँ	महिला शिक्षक % में (एन = 400)	पुरुष शिक्षक % (एन = 400)
विधायी शैली	79.1	75.9
कार्यकारी शैली	80.96	77.82
न्यायिक शैली	78.4	79.4
पदानुक्रमित शैली	81.4	78.06
राजशाही शैली	79.63	79.17
ओलिगार्सिक शैली	75.76	74.82

अराजक शैली	75.51	74.8
वैश्विक शैली	75.51	74.2
स्थानीय शैली	79.72	80.33
आंतरिक शैली	78.71	75.47
बाहरी शैली	76.11	76.18
उदार शैली	80.3	79.78
रुढ़िवादी शैली	78.23	80.72

तालिका 3 के आधार पर, यह दिखाया गया है कि सोचने की शैली रखने वाली महिला माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के प्रतिशत से पता चला है कि 79.1 प्रतिशत महिला शिक्षक विधायी थीं, 80.96% महिला शिक्षक कार्यकारी थीं, 79.4% महिला माध्यमिक विद्यालय की शिक्षक न्यायिक थीं, 81.4 महिला शिक्षकों का% प्रकृति में पदानुक्रमित था, 79.63% महिला शिक्षक राजशाही थीं और 80.3% शिक्षक उदार थे। दूसरी ओर 75.7% महिला शिक्षकों के पास कुलीन शैली, 75.51% अराजक शैली, 75.51% वैश्विक शैली,

78.71 आंतरिक शैली, 76.11% बाहरी शैली, 78.23% रूढ़िवादी शैली है।

तालिका 4: लिंग और स्थान के संदर्भ में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता

स्थान/प्रभावशीलता	असरदार %		मध्यम रूप से प्रभावी %		प्रभावी % में	
	पुरुष	महिला	पुरुष	महिला	पुरुष	महिला
ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक	61.5	71	22	9.5	16.5	19.5
शहरी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक	71	64.5	20.25	24.5	8.75	11

तालिका से, यह पता चला कि ग्रामीण क्षेत्र के मामले में 61.5% पुरुष माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक प्रभावी, 22% मध्यम प्रभावी और 16.5% गैर-प्रभावी पाए गए। जबकि महिला माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों के मामले में, 71% शिक्षक प्रभावी पाए गए, 9.5% शिक्षक मध्यम रूप से प्रभावी पाए गए और केवल 19.5% महिला शिक्षक अप्रभावी शिक्षकों की श्रेणी में आती हैं।

तालिका 5: पुरुष और महिला माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता की तुलना प्रदर्शित करती है

शिक्षक प्रभावशीलता	एन	अर्थ	एस.डी	डी एफ	टी- मान	स्तर का महत्व
महिला	400	163.91	36.15			.01 स्तर पर महत्वपूर्ण
पुरुष	400	154.77	33.262	798	3.72	

उपरोक्त तालिका 5 से पता चलता है कि महिला शिक्षकों का औसत अंक (163.91) पुरुष शिक्षकों के औसत स्कोर (154.77) से अधिक है। परिकलित t मान (3.72) है जो 798 डिग्री स्वतंत्रता के साथ .01 स्तर के महत्व के तालिका मान (2.58) से अधिक है। इससे पता चलता है कि माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों में सार्थक अन्तर है।

तालिका 6: ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता की तुलना प्रदर्शित करती है

शिक्षक प्रभावशीलता	एन	अर्थ	एस.डी	डीएफ	टी- मान	स्तर का महत्व
ग्रामीण	400	150.87	35.943			0.01 स्तर पर सार्थक
शहरी	400	167.87	32.017	798	7.049	

तालिका 6 से पता चलता है कि ग्रामीण शिक्षकों का औसत अंक (150.87) शहरी शिक्षकों के औसत स्कोर (167.87) से कम है। परिकलित टी मान (7.049) है जो 0.01 स्तर पर सार्थक था। परिणाम बताते हैं कि ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच महत्वपूर्ण अंतर है। अतः शून्य परिकल्पना कि "ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है" को अस्वीकार किया जाता है।

निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की उनकी सोच शैली, और जनसांख्यिकीय चर के संबंध में शिक्षक प्रभावशीलता पर आयोजित किया था। चूंकि शिक्षा प्रणाली के गुणात्मक सुधार के संदर्भ में शिक्षक प्रभावशीलता महत्वपूर्ण पहलू है, इसलिए यहां शोधकर्ता ने उन चरों का पता लगाया जो शिक्षकों की प्रभावशीलता को प्रभावित करते हैं। अध्ययन का निष्कर्ष है कि अधिकांश शिक्षक सामान्य रूप से प्रभावी हैं और कुछ अप्रभावी शिक्षकों की श्रेणी में हैं। शिक्षक की प्रभावशीलता भी सोच शैलियों और व्यावसायिक तनाव से प्रभावित होती है। वर्तमान अध्ययन के परिणाम ने शिक्षक प्रभावशीलता के साथ कार्यकारी, पदानुक्रमित, रूढ़िवादी और विधायी शैलियों के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध दिखाया। चूंकि चिन्तन शैली का उपलब्धि से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है, अतः विद्यार्थी की उपलब्धि के पोषण एवं सुदृढ़ीकरण के लिए उपयुक्त चिंतन शैली का अनुसरण किया जाना चाहिए।

संदर्भ

1. रानी सरला और देवी पूर्णिमा (2015) लिंग, स्कूल के प्रकार और शिक्षण अनुभव के संबंध में वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन। सूचनात्मक और भविष्य अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। खंड 3, अंक 4
2. अनुराधा विजया (2014)। व्यक्तिगत और

- व्यावसायिक दक्षता से संबंधित शिक्षकों की नौकरी का तनाव। शिक्षा का कॉन्फ्लिक्स जर्नल, खंड 2, अंक 1।
3. सैदेह मसाफी, ओमिद रेज़ाई, नाज़नीन नज़ाफी, हदीस होसेनज़ादे और कातायौन तेहरांची (2014) ने हाई स्कूल के छात्रों में सोच शैली और लिंग के बीच संबंधों की खोज की। जैविक विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान जर्नल वॉल्यूम। 3(12), 1-4।
 4. वांग यिंग और पेंग सन-केउंग निकोलस (2013)। बीजिंग के प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की सोच शैली। शिक्षा नीति, सुधार और स्कूल नेतृत्व। भाग 3, पीपी 231-239।
 5. कौट्स अमित और चेची कुमार विजय (2014), ए स्टडी ऑफ टीचर इफेक्टिवनेस इन रिलेशन टू टाइप ऑफ इंस्टीट्यूशन, इमोशनल इंटेलिजेंस एंड टीचिंग एक्सपीरियंस। अनादोलु जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइंसेज इंटरनेशनल, वॉल्यूम 4 नंबर -2।
 6. पचैयप्पन। पी और राज उषालय। डी (2014) माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता का मूल्यांकन। आईओएसआर जर्नल ऑफ रिसर्च एंड मेथड इन एजुकेशन। वॉल्यूम 4, अंक-1 पीपी 52-56।
 7. जानी भारती (2017)। कालाहांडी के प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों का तनाव। अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा और अनुसंधान जर्नल। खंड 3, अंक 1.
 8. कटिगरी अलीपुर शिवा, हसन हेदरी हसन, फिरोज़ी सेतारेह, मोहम्मदी अरिया अलीरेज़ा (2017) ने हाई स्कूल के छात्रों की परीक्षा की चिंता का पता लगाया: सोच और सीखने की शैली की भूमिका। शिक्षा के अंतःविषय जर्नल। खंड 1, संख्या 2.
 9. सान्याल, एन., फर्नांडीस, टी., और फातमा, ए. (2016)। शिक्षकों के बीच व्यक्तिगत प्रभावशीलता, संगठनात्मक संस्कृति और कार्य संबंधी तनाव। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड मल्टीडिसिप्लिनरी स्टडीज। Vol.04, अंक 02, 251-270।
 10. गुप्ता, एन., और श्रीवास्तव, एन. (2016), माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता और नौकरी से संतुष्टि के संबंध में शिक्षक प्रभावशीलता। गोल्डन रिसर्च विचार। खंड 5, अंक-8।
 11. तूर कौर कमलप्रीत (2016) माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता, सामान्य बुद्धि और रचनात्मकता का एक अध्ययन। जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज, ट्रेड्स एंड प्रैक्टिसेज। वॉल्यूम। 4, नंबर 1 पीपी 51 - 65।
 12. शकोम्बी, एफ।, मेलोनाशी, ई।, और फ़नाज एन। (2015)। कोसोवो में शिक्षकों के बीच कार्यस्थल तनाव।

Corresponding Author

Sandhya Dubey*

Research Scholar, Shri Krishna University,
 Chhatarpur M.P.